इस बार लोक प्रशासन जुलाई–दिसम्बर 2020 के विशेषांक का विषय **आधुनिक प्रशासकीय संदर्भ में गांधी की प्रासंगिकता** है जिस पर एक लधु दिशा निर्देश सलंग्न है।

आधुनिक प्रशासकीय संदर्भ में गांधी की प्रासंगिकता

महात्मा गांधी अपने प्रयोगधर्मी विचारों के कारण सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक विचारक, राजनेता, समाज सुधारक एवं सर्वश्रेष्ठ नैतिकता के प्रतीक के रूप में जाने जाते हैं। गांधी एक कुशल प्रशासक, नेतृत्वकर्त्ता एवं समाज सुधारक थे। उनके विचार तात्कालिक थे लेकिन सार्वभौमिक हो गये। उन्होंने व्यक्ति, समाज और राष्ट्र तीनों में नैतिकता को स्थापित करने का प्रयास किया। असाधारण व्यक्ति से महात्मा की यात्रा नैतिकता की यात्रा है। नैतिक बल के द्वारा उन्होंने अहिंसा का सफल प्रयोग कर पूरी दुनिया से अंग्रेज शासन के खात्मा का बिगुल बजाया। परिणामतः पूरे विश्व से साम्राज्यवाद का अंत हुआ।

समय के अनुसार, समस्याओं में परिवर्तन होते रहते हैं किन्तु महान चिंतक वे होते हैं जिनके विचारों की प्रासंगिकता परिवर्तित समस्याओं के सांदर्भिक समाधान हेतु भी समीचीन होती है। महात्मा गांधी ने अहिंसा के प्रतिपादक के रूप में मानव इतिहास में पहली बार इसके व्यापक संदर्भ में राजनीतिक एवं प्रशासनिक प्रयोग किया जिसमें वे सफल हुए। अहिंसा के राजनीति में होने वाले प्रयोग का एक नाम सत्याग्रह है। गांधी ने इसका प्रयोग सबसे पहले किया और उनके पश्चात् दुनिया भर में राज्य शक्ति के विरूद्ध होने वाले राजनीतिक विरोधों में सत्याग्रह सर्वाधिक प्रयोग में आने वाला एक तकनीक बना। गांधीजी का चिंतन समग्रवादी, सार्वभौमिक एवं कालजयी है। गांधी के सिद्धांतों का भारतीय प्रशासन में सभी स्तरों पर लागू करना समय की मांग है। नैतिकता का क्षय, बेईमानी, भ्रष्टाचार, लालफीताशाही, भाईभतीजावाद आदि से निजात पाने के लिए तथा प्रशासन को उदार, पारदर्शी तथा जनप्रिय बनाने के लिए नैतिकता का समायोजन अति आवश्यक है। कुशल लोग अगर उच्च पदों पर नहीं जायेंगे तो प्रशासनिक संरचना बिगड़ जायेगी तथा लोगों का शासन एवं प्रशासन से विश्वास हट जायेगा। वर्तमान समय में प्रशासन या शासन संविधान के अनुसार चल रहा है न कि गांधी के बताये गये रास्ते पर। उदाहरणस्वरूप गांधी ने विकेन्द्रित शासन व्यवस्था की परिकल्पना की जब कि वर्तमान शासन व्यवस्था की प्रवृत्ति केन्द्रित है। गांधी का विकेन्द्रीकरण सभी स्तरों पर था। नीचे से ऊपर की ओर अर्थात् गांव से केन्द्र की ओर था जबकि आज वह

केन्द्र से गांव की ओर है। गांधी ने रामराज्य की कल्पना की जो एक समता मूलक सर्वजन हिताय व समावेशी थी, जहाँ पर न कोई शोषक होगा न कोई शोषित।

गांधी जनता को सर्वोपरि मानते थे उनके अनुसार शासन जनता के लिये है न कि जनता शासन के लिए। गांधी हर कीमत पर स्वायत्ता, स्वतंत्रता, समता और वैचारिक विभिन्नता को सर्वोपरि मानते थे। उनका कहना था मतभेद हो पर मनभेद न हो। आज मनुष्य भौतिक उन्नति के मार्ग से विकास की खोज रहा है इसी को सुख मान रहा है परिणामतः विभिन्न प्रकार के संघर्ष उत्पन्न हो रहे हैं। वर्तमान स्थिति में प्रशासन खुद ही गंभीर तनाव के अधीन है जिसके चलते वह मूल से भटक गया है इसलिए गांधीवादी दृष्टिकोण को ध्यान में रख कर, अपनी जीवन शैली, प्रशासन शैली को बदलें तथा सौहार्दपूर्ण संबंध में जीना सीखें।

उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण के युग में शासन व्यक्ति के जीवन तक पहुँच गया है। गांधीजी का मानना है कि वह सरकार अच्छी है जो कम से कम शासन करें। वे व्यक्ति की स्वतंत्रता के पक्षधर थे। उन्होंने उस ग्राम स्वराज्य की कल्पना की जो कि अपने आप में स्वशासित इकाई हो। जो सभी दृष्टिकोण से स्वावलम्बी हो तथा प्रशासन की इकाई हो।

महात्मा गांधी के विचारों की प्रासंगिकता का परीक्षण समय समय पर तात्कालिक समस्याओं के संदर्भ में किया जाता रहा है। इसी प्रक्रिया में वर्तमान प्रशासनिक समस्याओं के संदर्भ में भी गांधी के विचारों का परीक्षण किया जाना प्रासंगिक है। गांधी सदैव एक वैकल्पिक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्वि करते हैं जो मार्क्सवाद और पूंजीवाद से अलग हट कर समावेशी एवं मानवतावादी है। गांधी का दृष्टिकोण व्यक्ति को सरल, नैतिक एवं सामुदायिक जीवन जीने हेतु प्रेरित करता है। यह प्रशासक को व्यक्ति एवं समाज से जोड़ता है न कि अलग करता है। गांधी चिंतन बहुआयामी है। गांधी ने प्राचीन ज्ञान को आधुनिक संदर्भ में प्रयोग किया। 1909 में उनकी लिखी पुस्तक 'हिंद स्वराज' उनके दृष्टिकोण का आधार प्रस्तुत करती है। यदि समकालीन प्रशासक एवं शासक वर्ग एवं राजनेता गांधी के विचारों का अनुसरण करें तो अनेक समस्याओं का समाधान संभव है तथा आतंकवाद, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिक दंगे जैसी समस्याएं पैदा ही ना हों।

गांधी भारतीय संस्कृति के परम उद्घोषक हैं। गांधी के आदर्श उनके निजी तथा सामाजिक जीवन तक ही सीमित नहीं रहे। इनका प्रयोग प्रशासनिक क्षेत्र में भी संभव है।

निम्नलिखित विषयों पर आपके लेख आमंत्रित हैं:

- गांधी वैचारिकी का समकालीन विषय एवं संदर्भ
- गांधी का ग्राम स्वराज एवं पंचायती राज व्यवस्था
- गांधी और सामाजिक न्याय
- गांधी और विकास की अवधारणा
- भारतीय संस्कृति एवं गांधी
- महात्मा गांधी और प्रशासन
- वर्तमान प्रशासन के संदर्भ में गांधी
- गांधी और नवीन भारत
- गांधी और समावेशी विकास

लेखकों से निवेदन है कि वह हमें अपना लेख 30 अप्रैल 2020 तक 3000 से 5000 शब्दों के भीतर नीचे लिखे email पर भेज दें क्योंकि यह लेख समीक्षा के लिए समीक्षकों के पास जायेंगे।

email: lokprashasan2008@gmail.com

पता:
सम्पादक (लोकप्रशासन)
प्रो0 एस0एन0मिश्रा
भारतीय लोक प्रशासन संस्थान
इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, रिंग रोड,
नई दिल्ली–10002